

## कांग्रेस की देशभक्ति के लिए मुसलमानों को रिश्वत

सोचा था कि उप्र, गुजरात में जूते खाने के बाद कांग्रेस को अक्ल आ गई होगी, लेकिन नहीं... बरसों की गन्दी आदतें जल्दी नहीं बदलतीं 31 दिसम्बर के "टाइम्स ऑफ़ इंडिया" और "रेडिफ़.कॉम" (<http://www.rediff.com/news/2007/dec/30mad.htm>) की इस खबर के अनुसार केन्द्रीय मंत्रिमंडल ने फैसला किया है कि 11वीं पंचवर्षीय योजना में अब से मदरसों में 15 अगस्त और 26 जनवरी को तिरंगा फहराने पर उन्हें विशेष अनुदान दिया जायेगा | अब इस घृणित निर्णय के पीछे कांग्रेस की वही साठ साल पुरानी मानसिकता है या कुछ और कहना मुश्किल है, लेकिन इस निर्णय ने कई सवाल खड़े कर दिये हैं...

- (1) क्या तिरंगा फहराना धर्म आधारित है या देशभक्ति आधारित?
- (2) क्या मदरसों में तिरंगा फहराने के लिये इस प्रकार की रिश्वत जायज है?
- (3) 11 वीं पंचवर्षीय योजना से इस प्रकार का विशेष (?) अनुदान देना क्या ईमानदार आयकरदाताओं के साथ विश्वासघात नहीं है?
- (4) क्या एक तरह से कांग्रेस यह स्वीकार नहीं कर चुकी, कि मदरसों में तिरंगा नहीं फहराया जाता? और वहाँ देशभक्त तैयार नहीं किये जा रहे? लेकिन इसके लिये दण्ड की बजाय पुरस्कार क्यों?
- (5) क्या अब कांग्रेस इतनी गिर गई है कि देशभक्ति "खरीदने" (?) के लिये उसे "रिश्वत" का सहारा लेना पड़ रहा है? इन सब प्रश्नों के मद्देनजर अब ज्यादा कुछ कहने को नहीं रह जाता, सिवाय इसके कि लगता है कांग्रेस को विभिन्न विधानसभाओं और फिर आने वाले लोकसभा चुनाव में भी "सबक" सिखाना ही पड़ेगा...

इस फैसले के पहले भी "बबुआ" प्रधानमंत्री, बजट में अल्पसंख्यकों के लिये 15% आरक्षित करने का संकल्प ले चुके हैं, यानी उस 15% से जो सड़क बनेगी उस पर सिर्फ अल्पसंख्यक ही चलेगा, या उस 15% से जो बाँध बनेगा उससे बाकी लोगों को पानी नहीं मिलेगा... पता नहीं ऐसे फैसलों से कांग्रेस क्या साबित करना चाहती है, लेकिन यह बात पक्की है कि ऐसे नेहरू (जो केरल के मन्दिर में धोती बाँधने के आग्रह पर आगबबूला होते थे, लेकिन अजमेर में खुशी-खुशी टोपी पहनते थे) या फिर वह नेहरू जिन्होंने आजादी के वक्त एकमात्र रियासत "कश्मीर" को समझाने(?) का काम हाथ में लिया था और सरदार पटेल को बाकी चार सौ रियासतें संभालने को कहा था... इतिहास गवाह है कि नेहरू से एक रियासत तक ठीक से "हैण्डल" नहीं हो सकी, या शायद जानबूझकर नहीं की... उन्हीं नेहरू की संताने देश को बाँटने के अपने खेल में सतत लगी हुई हैं.. यदि

जनता अब भी नहीं जागी तो पहले असम सहित उत्तर-पूर्व फिर कश्मीर और आधा पश्चिम बंगाल भारत से अलग होते देर नहीं लगेगी... दिक्कत यह है कि जनता और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया को "सेक्स" और "सेंसेक्स" से ही फुर्सत नहीं है...

**बी एन शर्मा**